समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

● १५ अगस्त २०१२ ● वर्ष : १६
● अंक : ०२ (निरंतर अंक : १८२)

मासिक समाचार पत्र

पूज्य बापूजी के साथ सत्य साँई बाबा

श्री अटल बिहारी बाजपेयी, तत्कालीन प्रधानमंत्री

आत्मभाव से सबको देखें,
ऐसा जीवन्मुक्त फकीर।
जो भी कहें वे आत्मभाव से,
हो जाये पत्थर पे लकीर॥

धर्म रक्षा मंच के सभाध्यक्ष पूज्य बापूजी

अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना जन्मसिद्ध अधिकार है !

(राष्ट्रभाषा दिवस : १४ सितम्बर)

"हम विदेशी शिक्षा के शिकार होकर मातृद्रोह करते हैं।"
- गांधीजी

लॉर्ड मैकाले ने कहा था : "मैं यहाँ की शिक्षा-पद्धति में ऐसे कुछ संस्कार डाल जाता हूँ कि आनेवाले वर्षों में भारतवासी अपनी ही संस्कृति से घृणा करेंगे... मंदिर में जाना पसंद नहीं करेंगे... माता-पिता को प्रणाम करने में तौहीन महसूस करेंगे... वे शरीर से तो भारतीय होंगे लेकिन दिलोदिमाग से हमारे ही गुलाम होंगे..."

हमारी शिक्षा-पद्धति में उसके द्वारा डाले गये संस्कारों का प्रभाव आज स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। आज के विद्यार्थी पढ़-लिख के स्नातक होकर बेरोजगार हो नौकर बनने के लिए भटकते रहते हैं।

महात्मा गांधी के शब्दों में : "करोड़ों लोगों को अंग्रेजी की शिक्षा देना उन्हें गुलामी में डालने जैसा है। मैकाले ने शिक्षा की जो बुनियाद डाली, वह सचमुच गुलामी की बुनियाद थी। यह क्या कम जुल्म की बात है कि अपने देश में अगर मुझे इंसाफ पाना हो तो मुझे अंग्रेजी भाषा का उपयोग करना पड़े ! हिन्दुस्तान को गुलाम बनानेवाले तो हम अंग्रेजी जाननेवाले लोग हैं। प्रजा की हाय अंग्रेजों पर नहीं बल्कि हम लोगों पर पड़ेगी।"

अंग्रेजी का हमारे जीवन पर कितना दुष्प्रभाव पड़ता है, इस पर गांधीजी ने कहा : "विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा पाने में जो बोझ दिमाग पर पड़ता है वह असह्य है। यह बोझ केवल हमारे बच्चे ही उठा सकते हैं लेकिन उसकी कीमत उन्हें ही चुकानी पड़ती है। वे दूसरा बोझ उठाने के लायक नहीं रह जाते। इससे हमारे स्नातक अधिकतर निकम्मे, कमजोर, निरुत्साही, रोगी और कोरे नकलची बन जाते हैं। उनमें खोज की शक्ति, विचार करने की ताकत, साहस, धीरज, बहादुरी, निडरता आदि गुण बहुत ही क्षीण हो जाते हैं। इससे हम नयी योजनाएँ नहीं बना सकते, बनाते हैं तो उन्हें पूरा नहीं कर सकते। कुछ लोग जिनमें उपरोक्त लक्षण दिखाई देते हैं, अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं।"

गांधीजी ने आगे कहा कि "माँ के दूध के साथ जो संस्कार मिलते हैं और जो मीठे शब्द सुनाई देते हैं, उनके और पाठशाला के बीच जो मेल होना चाहिए, वह विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा लेने से टूट जाता है। हम ऐसी शिक्षा के शिकार होकर मातृद्रोह करते हैं।"

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी मातृभाषा को बड़े सम्मान से देखा और कहा था कि "अपनी भाषा में शिक्षा पाना जन्मसिद्ध अधिकार है। मातृभाषा में शिक्षा दी जाय या नहीं, इस तरह की कोई बहस होना ही बेकार है।" उनकी मान्यता थी कि 'जिस तरह हमने माँ की गोद में जन्म लिया है, उसी तरह मातृभाषा की गोद में जन्म लिया है। ये दोनों माताएँ हमारे लिए सजीव और अपरिहार्य हैं।'

गांधीजी ने मातृभाषा-प्रेम को व्यक्त करते हुए कहा कि "मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियाँ क्यों न हों, मैं उससे उसी तरह चिपका रहूँगा जिस तरह अपनी माँ की छाती से। वही मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है। मैं अंग्रेजी को उसकी जगह प्यार करता हूँ लेकिन अंग्रेजी उस जगह को हड़पना चाहती है जिसकी वह हकदार नहीं है तो मैं उससे सख्त नफरत करूँगा। मैं इसे दूसरी जबान के तौर पर जगह दूँगा लेकिन विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम, स्कूलों में नहीं। वह कुछ लोगों के सीखने की चीज हो सकती है, लाखों-करोड़ों की नहीं। रूस ने बिना अंग्रेजी के विज्ञान में इतनी उन्नति की है। आज अपनी मानसिक गुलामी की वजह से ही हम यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। मैं इस चीज को नहीं मानता।"

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अपनी मात्रभाषा में शिक्षा प्राप्त करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है !

(राष्ट्रभाषा दिवस : १४ सितम्बर)

विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा देना मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक रूप से अति आवश्यक है, क्योंकि विद्यालय आने पर बच्चे यदि अपनी भाषा को व्यवहार में आयी हुई देखते हैं तो वे विद्यालय में आत्मीयता का अनुभव करने लगते हैं। साथ ही उन्हें सब कुछ यदि उन्हींकी भाषा में पढ़ाया जाता है तो उनके लिए सारी चीजों को समझना बहुत ही आसान हो जाता है।

रवीन्द्रनाथजी ने जापान का दृष्टांत देते हुए बताया है कि ''इस देश में जितनी उन्नति हुई है, वह वहाँ की अपनी भाषा जापानी के ही कारण है। जापान ने अपनी भाषा की क्षमता पर भरोसा किया और अंग्रेजी के प्रभुत्व से जापानी भाषा को बचाकर रखा।''

जापानी इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि वे अमेरिका जाते हैं तो वहाँ भी अपनी मातृभाषा में ही बातें करते हैं। ...और हम भारतवासी ! भारत में रहते हैं फिर भी... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८२, अगस्त २०१२)**

क्रोध का सदुपयोग करें

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''एक होता है क्रोधी होना, दूसरा होता है क्रोध करना। क्रोधी होने से आदमी का हृदय जलता है और सामनेवाले का भी नुकसान करता है। यदि क्रोध करता है और क्रोध करने में यदि समझ का उपयोग होता है तो अनुशासनीय वृत्ति होती है, उसका हृदय जलता नहीं है, सामनेवाले का अहित नहीं होता है बल्कि वह अनुशासित होता है। दुर्वासा क्रोधी नहीं होते थे, क्रोध करते थे। आत्मज्ञानी संत क्रोधी नहीं होते, क्रोध करते दीखते हैं, जैसे रंगमंच पर क्रोध का अभिनय होता है। आम आदमी क्रोधी हो जाता है। यह विवशता है।''

क्रोध प्रायः परिस्थितिवश पैदा होता है। अगर उन परिस्थितियों का शांतचित्त होकर विश्लेषण किया जाय तो क्रोध से बचा जा सकता है। संत-सान्निध्य, सत्संग, मौन, भगवन्नाम-जप, भगवद्ध्यान आदि द्वारा क्रोध को नियंत्रित करना सम्भव है।

क्रोध से बचने के उपाय ... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८२, अगस्त २०१२)**

मिला संत का संग, लगा भक्ति का रंग

(पूज्य बापूजी की मधुमय अमृतवाणी)

गाँव की सब बाइयाँ इकट्ठी हो गयीं।

बाई (धोबी की पत्नी) : ''चलो-चलो, क्या हो गया, बाबा ने क्या कर दिया मेरे आदमी को !'' बाइयाँ आयीं, देखा कि वह धोबी तो 'हरि बोल... हरि बोल... हरि बोल...' कीर्तन कर रहा है !

बाई बोली : ''ऐ छग्गू के पिता ! 'हरि बोल, हरि बोल' क्या बोल रहे हो ? कपड़ा धोओ। सुनते

नहीं !''

ऐसा करके बाई ने अपने पति का हाथ पकड़ा तो वह भी बोलने लगी : ''हरि बोल... हरि बोल... हरि बोल...''

दूसरी बाइयों ने उस बाई का हाथ पकड़कर कहा : ''तेरे को क्या हो गया ? तू काहे हरि बोले !...'' तो वे बाइयाँ भी बोलने लगीं : ''हरि बोल... हरि बोल...'' उन बाइयों के आदमी आये कि ''अरे तुमको क्या हो गया ?'' वे उन बाइयों को रोकें तो वे भी...

(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८२, अगस्त २०१२)

चार रक्षक

जो लोग सत्संग में जाकर भगवत्कथा सुनते हैं, हरिनाम-कीर्तन करते हैं, संतों से भगवन्नाम की दीक्षा लेकर जप करते हैं, ध्यान करते हैं, उनके जीवन में सुख, शांति, समृद्धि का खजाना निरंतर बढ़ता रहता है। भगवान के चिंतन के फलस्वरूप वे देर-सवेर भगवद्धाम अथवा मोक्ष को प्राप्त होते हैं। सत्संग में संतों के श्रीमुख से सुनकर मैंने चार चौकीदार तैनात कर रखे हैं, जो हर समय मेरी रक्षा करते रहते हैं।''

अशांत राज्य के परेशान राजा को अपनी गलती का एहसास हुआ। परंतु उसे चार चौकीदार की बात पर आश्चर्य हुआ, वह बोला : ''बस चार ! मेरे यहाँ तो चौकीदारों की फौज है। चार चौकीदारों से कैसे काम चल सकता है ?''

सत्संगी राजा मुस्कराते हुए बोला : ''मित्र ! मेरे रक्षक... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८२, अगस्त २०१२)**

शिक्षण : पेशा नहीं दैवी कार्य

(शिक्षक दिवस पर विशेष)

यह वह देश है जहाँ ज्ञान का दीपक जलता है और 'सा विद्या या विमुक्तये।' यह विद्या की परिभाषा की गयी है। हर बच्चे के जीवन में माँ को प्रथम शिक्षक का दर्जा दिया गया है, अतः शिक्षक दिवस के अवसर पर हमारे देश के शिक्षक व अभिभावक कुछ बिंदुओं पर अवश्य विचार करें, चिंतन करें :

शिक्षण पेशा नहीं दैवी कार्य है : आचार्य चाणक्य ने कहा था : 'शिक्षक साधारण नहीं होता, निर्माण व प्रलय उसकी गोद में पलते हैं।' बच्चों, किशोरों का मन गीली मिट्टी के लोंदे की तरह होता है। उसे जो भी आकार दें, वह उसे ग्रहण कर लेता है। अतः उसमें उन्नत संस्कारों का सिंचन करना शिक्षक का परम कर्तव्य है। शिक्षक के लिए यह पेशा केवल वेतन पाने का साधन नहीं बल्कि महापुरुषों ने राष्ट्र-निर्माण में जो अपना जीवन आहुत कर दिया, उस महायज्ञ की एक समिधा बनने का सुअवसर... **(शेष भाग पढ़ने हेतु देखें लोक कल्याण सेतु, अंक : १८२, अगस्त २०१२)**

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2012
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 30-06-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.

विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों की झलकियाँ

अनगुल (ओड़िशा)

नासिक (महा.)

गोधरा (गुज.)

कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

विद्यार्थियों में नोटबुक एवं सत्साहित्य वितरण

बैंगलोर (कर्नाटक)

बसौना, जि. सहरसा (बिहार)

यिंगकियोंग (अरुणाचल प्रदेश)

भांडुप (पश्चिम), मुंबई

तन-मन को पावन करतीं हरिनाम संकीर्तन यात्राएँ

लुधियाना (पंजाब)

सनावद, जि. खरगोन (म.प्र.)

कलोल, जि.गांधीनगर (गुज.)

विविध सेवाकार्य

बालेश्वर तथा अनगुल (ओड़िशा) में छाछ-वितरण।

स्टेशन का पुरा, जि. ग्वालियर (म.प्र.) में बर्तन-वितरण तथा जबलपुर (म.प्र.) रेलवे स्टेशन पर पेयजल-सेवा।

अम्बिकापुर, जि. सरगुजा (छ.ग.) में रक्षाबंधन उत्सव तथा भावनगर (गुज.) के कारागृह में प्रोजेक्टर द्वारा विडियो सत्संग।